अभिप्रेरणा (Motivation)

(अभिप्रेरणा का संप्रत्यय, प्रकार एवं छात्रों को प्रेरित करने में शिक्षक की भूमिका)

(Concept of Motivation, types and role of teacher in motivating students)

अभिप्रेरणा का संप्रत्यय

(Concept of Motivation)

- अभिप्रेरणा से तात्पर्य एक ऐसी आंतरिक मनोवैज्ञानिक शक्ति से है जो प्राणी के विभिन्न व्यवहारों को संचालित, निर्देशित तथा संगठित करती है।

- अभिप्रेरणा शब्द को प्राणी की सभी प्रकार की पहल करने वाली तथा बनाए रखने वाली प्रक्रियाओं को इंगित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

- अभिप्रेरणा प्रत्यक्ष रूप से देखी नही जा सकती, ये एक आंतरिक शक्ति होती है जो प्राणी को किसी विशेष प्रकार के कार्य करने के लिए बाध्य करती है।

अभिप्रेरणा की परिभाषा

(Definition of Motivation)

अभिप्रेरणा शब्द को भिन्न-भिन्न ढंग से परिभाषित किया है।

★ **'गुड' के अनुसार**- "अभिप्रेरणा किसी कार्य को प्रारंभ करने, जारी रखने अथवा नियंत्रित करने की प्रक्रिया है।"

★ **'ब्लेयर जोन्स' तथा 'सिम्पसन' के अनुसार**- "अभिप्रेरणा वह प्रक्रिया है जिसमे सीखने वाले व्यक्ति की आंतरिक ऊर्जाएं अथवा आवश्यकताएं उसके वातावरण के विभिन्न लक्ष्यों की ओर निर्देशित होती है।

★ **'एटकिन्सन' के अनुसार-** "अभिप्रेरणा का सम्बंध किसी एक अथवा अधिक प्रभावों को उत्पन्न करने के लिए, कार्य करने की प्रवत्ति को उद्वेलित करने से होता है।

अभिप्रेरणा के प्रकार

(Kinds of Motivation)

1. **जन्मजात अभिप्रेरक:** जन्मजात अभिप्रेरक वे अभिप्रेरक होते है जो व्यक्ति में जन्म से पाए जाते है। जैसे– निद्रा, भूख, प्यास आदि।

2. **अर्जित अभिप्रेरक:** अर्जित अभिप्रेरक वे अभिप्रेरक होते है जिन्हे प्राणी अपने प्रयासों व अनुभवों से प्राप्त करते है। जैसे– रुचि, प्रतिष्ठा आदि।

3. **प्राथमिक अभिप्रेरक:** प्राथमिक अभिप्रेरको को अन्य नाम दैहिक अभिप्रेरक के नाम से भी जाना जाता है तथा ये प्राणी की दैहिक व मूलभूत आवश्यकताओं से संबंधित होते है। जैसे– भूख, प्यास कृष आदि।

4. **द्वितीय अभिप्रेरक:** द्वितीय अभिप्रेरकों को मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक भी कहा जाता है तथा ये प्राणी की सामाजिक या मनोवैज्ञानिक आवश्यकता से संबंध रखते है। जैसे–प्रतिष्ठा, जिज्ञासा, स्वीकृति आदि।

5. **स्वाभाविक अभिप्रेरक:** स्वाभाविक अभिप्रेरक व्यक्ति में स्वभावगत प्राकृतिक रूप से पाए जाते है। जैसे– खेलना, सुख प्राप्त करना आदि।

6. **<u>कृत्रिम अभिप्रेरक:</u>** कृत्रिम अभिप्रेरक प्राणी के कार्य अथवा व्यवहार को नियंत्रित करने प्रोत्साहन करने अथवा वांछित दिशा देने के लिए स्वाभाविक अभिप्रेरकों के पूरक के रूप में जानबूझ कर प्रयुक्त किए जाते है।जैसे– पुरस्कार, प्रशंसा, दंड आदि।

7. **<u>जैविक अभिप्रेरक</u>**: जैविक अभिप्रेरक प्राणी की जैविक आवश्यकताओं के फलस्वरूप उत्पन्न होते है। इसमें संवेग रखे जाते है। जैसे– क्रोध, भय, प्रेम आदि।

8. **<u>मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक:</u>** मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरक व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के फलस्वरूप उत्पन्न होते है। जैसे– रचनात्मकता, जिज्ञासा, पलायन आदि।

9. **<u>सामाजिक अभिप्रेरक:</u>** सामाजिक अभिप्रेरक सामाजिक मान्यताओं, संबंधों, परिस्थितियों, आदर्शो आदि के कारण उत्पन्न होते है। जैसे– प्रतिष्ठा, सुरक्षा, संग्रह आदि।

छात्रों को प्रेरित करने में शिक्षक की भूमिका

(Role of teacher in motivating students)

1. शिक्षक को सदैव ये कोशिश करनी चाहिए की वह अपने छात्रों को सदैव उनके स्तर के अनुरूप ही चुनौती दे ताकि वे आंतरिक रूप से अभिप्रेरित हो सके।

2. शिक्षक को छात्रों को ऐसे सकारात्मक परिवेश प्रदान करना चाहिए ताकि वो ज्यादा से ज्यादा प्रश्न पूछ सके।

3. शिक्षक को समय समय पर छात्रों की प्रगति के बारे में व्यक्तिगत फीडबैक भी प्रदान करना चाहिए।

4. शिक्षक को सदैव छात्रों को खुद कर के सीखने का अनुभव देना चाहिए।

5. शिक्षक को छात्रों को ऐसे असाइनमेंट देने चाहिए जो उनकी रुचि के साथ मेल खाने वाले हो जिससे वो अभिप्रेरित हो सके।